AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के शैक्षिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. राजकुमारी गजपाल
अतिथि व्यख्याता, समाजशास्त्र विभाग
शहीद दुर्वासा निषाद शासकीय महाविद्यालय
अर्जुन्दा, बालोद, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ सीखता है या करता है वह शिक्षा के माध्यम से ही करता है। प्राचीन काल में शिक्षा को न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया और न ही जीवकोपार्जन का साधन है वरन् शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो व्यक्ति को उत्तम जीवन व्यतीत करने व मोक्ष प्राप्त करने का साधन माना है। पलायन या प्रवास एक सार्वभौमिक तथ्य है। दुनिया के प्रत्येक समाज में किन्हीं न किन्हीं कारणों से प्रवास की प्रवृत्ति आवश्यक रूप से देखा जा सकता है। प्रवास के कारण भी अनेक हो सकते हैं, कभी प्रवास का कारण धार्मिक यात्रा या तीर्थाटन होता है तो कभी उच्च शिक्षा, रोजगार युद्ध, अकाल व महामारी जनसंख्या के बड़े पलायन का कारण बनती है। कारण के अनुरूप ही हमें इसका प्रभाव भी समाज में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही रूपों में देखने को मिलता रहा है। जहाँ सकारात्मक प्रवास के प्रभाव भी सकारात्मक होते है, वहीं विपत्ति एवं आपदा में किये जाने वाले प्रवास का नकारात्मक प्रभाव भी समाज पर पड़ता है। भारत में प्रवास की प्रकृति को अभी तक मूल रूप से प्राकृतिक आपदा, गरीबी और भूखमरी से जोड़कर देखा जाता रहा है। इसका कारण भी वाजिब है, क्योंकि भारत की जनगणना 2001 के अनुसार देश की कुल आबादी का 26 प्रतिशत भाग गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करता है और प्रवास का संबंध इस बड़े भाग से रहा है। भारत में जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या 121.02 करोड़ आंकलित की गयी है जिसमें 68.84 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है, जबकि 31.16 प्रतिशत की आबादी शहरों में निवास करती है। स्वतंत्र भारत के प्रथम जनगणना 1951 में गांवों और शहरों की आबादी का अनुपात 83 प्रतिशत एवं 17 प्रतिशत था। आजाद भारत के छह प्रतिशत दशक बाद 2011 की जनगणना में गांवों और शहरों की जनसंख्या का प्रतिशत 70 एवं 30 प्रतिशत थी। इन आंकडों से स्पष्ट होता है कि भारत में गांव के व्यक्तियों का शहरों की ओर पलायन बढ़ रहा है। अतः स्पष्ट है, कि छत्तीसगढ़वासियों का सम्पूर्ण जीवन आधार कृषि है, कृषि का स्वरूप भी अनुपजाऊ एवं एक फसलीय है, वही ग्रामीण क्षेत्रों की बढ़ती जनसंख्या एवं आवश्यकताओं की वृद्धि ने ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम पलायन की प्रवृत्ति में निरंतर वृद्धि की है, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय श्रम की अनुपलब्धता ने स्थानीय विकास को प्रभावित किया है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए इस विषय पर शोध कार्य प्रस्तुत किया गया है, ताकि छत्तीसगढ़ से श्रम पलायन का यहाँ की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सके।

मुख्य शब्द

श्रमिक, पलायन, शिक्षा, समाज.

प्रस्तुत शाोध प्रबंध "पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के शैक्षिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" शोधकर्ता द्वारा इस समस्या के समाधान के लिए अध्ययन किया गया, जिसके द्वारा पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के शैक्षिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन की वास्तविक स्थिति की प्राप्ति होगी।

अध्ययन का महत्व

भारत की जनगणना के अनुमानित रिपोर्ट के अनुसार 10 वीं तथा 11वीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के विकास तथा गरीबी उन्मूलन हेतु किए गए, तमाम प्रयत्नों के बाद भी दोनों ही क्षेत्रों में हमारी उपलब्धियाँ संतोष जनक नहीं कहीं जा सकती। एक ओर जहां अभी भी एक चौथाई से भी अधिक जनसंख्या निरक्षर है, वहीं दूसरी ओर तीस करोड़ से भी अधिक लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहें है और पलायन इन दोंनों ही ज्वलंत मुद्दों से जुड़ी है। चूंकि प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में बच्चों की शौक्षिक समस्याओं पर है। पलायन ऐसा कारक है, जिसके कारण बच्चों को शिक्षा की समस्याएं होती है, जो कि अध्ययन के महत्व को स्पष्ट करता है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

गौतम टीकाराम (2008) का अध्ययन नेपाल में परिवार के युवा सदस्य का प्रवास का वृद्धजनों पर पड़ने वाले प्रभाव से रहा है, जिसमें अध्ययन का निष्कर्ष यह स्पष्ट करता है, कि प्रवास के फलस्वरूप 80 प्रतिशत से अधिक वृद्धजन स्वयं को अकेला मददविहीन और भयभीत महसुस करते हैं। इस प्रकार की परेशानियाँ उन्हें अपने सामाजिक परिवेश और समुदाय से सामंजस्य स्थापित करने में बाधा पहुँचाती हैं। परिणामतः परिवार का युवा सदस्य का प्रवास उनके लिए अभिशाप से कम नहीं होता है।

यादव, (2008) ने छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम पलायन की समस्या एक आर्थिक विश्लेषण संबंधी अपने अध्ययन में कृषि श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले पलायन के कारणों एवं इसके प्रभावों को स्पष्ट किया है। निष्कर्ष, मूल निवास में रोजगार की उपलब्धता का औसत ज्ञात करने पर यह स्पष्ट हुआ है,कि मूल निवास में औसतन 3 माह हेतु रोजगार उपलब्ध रहता है। पलायनकर्त्ताओं के पलायन एवं उनके कार्यस्थल के मध्य की औसत दूरी 3.71 कि.मी. ज्ञात हुई है। पलायन स्थल के विभिन्न कार्य क्षेत्रों में पलायनकर्त्ताओं द्वारा औसतन 9.20 घंटे कार्य किया जाता है। अशिक्षित तथा शिक्षित पलायनकर्त्ताओं के मध्य संबंधों की सार्थकता ज्ञात करने हेतु काई वर्ग परीक्षण से यह स्पष्ट होता है,कि दोनों के मध्य सार्थक संबंध है। पलायन का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन से यह स्पष्ट है,कि पलायन से बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, समाजीकरण की प्रक्रिया के प्रभावित होने के साथ–साथ बालश्रम की समस्या तथा कुछ वर्षों पश्चात बच्चों के भी पलायनकर्त्ता बन जाने की संभावना बनी रहती है।

कोनेल जॉन और अन्य (2010) का अध्ययन थाईलैंड के ग्रामीण क्षेत्रों से युवा सदस्यों के प्रवास का परिवार के वृद्ध सदस्यों पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो से यह स्पष्ट है कि नगरों में प्रवास किये जाने के फलस्वरूप मोबाइल फोन पारिवारिक संबंधों को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके साथ ही प्रवास के फलस्वरूप घरेलु जरूरत की वस्तुओं की पूर्ति भी हो जाती है लेकिन छोटे परिवारों से युवा सदस्यों के प्रवास के फलस्वरूप परिवार के वृद्ध सदस्यों को सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्यगत समस्याओं से जुझना पड़ता है। खासकर अधिक उम्र के वृद्ध सदस्यों को थाईलैंड के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में यह एक प्रमुख समस्या के रूप में देखी गयी है।

अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्ता द्वारा ली गई शोध समस्या के अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया हैः

1. पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।

2. पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में उनके आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्ता अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है:

$\mathbf{H_1}$ पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की शैक्षिक स्थिति निम्न हो सकती है।

$\mathbf{H_2}$ पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिसीमाएँ निर्मित की हैं:

1. प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु दुर्ग जिले के अंतर्गत धमधा तहसील का चयन किया गया है।
2. अध्ययन हेतु धमधा तहसील के दस गॉवों में से 100 पलायन करने वाले श्रमिकों का चयन किया गया हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत लघुशोध समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

जनसंख्या हेतु दुर्ग जिले के अंतर्गत धमधा तहसील के अंतर्गत दस गांवों का चयन किया गया है जिसमें जनसंख्या के लिए कुल पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों को शामिल किया गया है।

न्यादर्श

जब किसी जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाईयों को चुन लिया जाता है, तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्श कहते हैं तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं।

प्रस्तुत लेख के उद्देश्य की पूर्ति के लिए दुर्ग जिले के धमधा तहसील के अंतर्गत दस गांवों के पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों का चयन किया गया है जिसके अन्तर्गत समस्या के समाधान हेतु 100 पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों का न्यादर्श हेतु चयन किया है। इनमें से प्राप्त परिणाम समग्र का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करेगें।

तालिका 1: न्यादर्श के अतंर्गत पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की संख्या

क्र.	चयनित गांव का नाम	पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की कुल संख्या	चयनित पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की कुल संख्या
01	अहेरी	37	10
02	अकोला	41	10
03	बरहापुर	33	10
04	चीचा	41	10
05	दनिया	53	10
06	दारगांव	39	10
07	गिरहोला	67	10
08	गोढ़ी	63	10
09	कपसदा	31	10
10	खेरधा	51	10
	कुल योग	456	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपकरण

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण साक्षात्कार– अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय अभिप्रयोग

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के अध्ययन में प्रतिशत विधि का प्रयोग समीक्षात्मक अध्ययन के लिए किया गया है। "पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन "करने के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया जाएगा, जिसमें अधिकतर (हां / नहीं) वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। इसके लिए संकलित प्रदत्तों को सारणीकृत किया गया और प्रदत्तों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का योग कर प्रतिशत निकाला गया है। इसके लिए संकलित प्रदत्तों को सारणीकृत किया गया। प्रदत्तों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का योग कर प्रतिशत निकाला गया है।

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

H_1 पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की शैक्षिक स्थिति निम्न हो सकती हैः

सारणी क्रमांक 2: पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की शैक्षिक स्थिति से संबंधित प्रश्न

क्र.	कथन	हाँ की संख्या	नहीं की संख्या	हॉ की कुल संख्या प्रतिशत में
1.	क्या आप साक्षर है ?	49	51	49
2.	यदि हां तो कहां तक शिक्षा प्राप्त की है?			
	➢ 5वी	52	46	48
	➢ 8वी	54	52	46
3.	यदि नहीं तो शिक्षा प्राप्त नहीं करने के कारण क्या है ?			
	➢ पिताजी ने नही पढ़ाया	49	47	30
	➢ खुद नहीं पढ़े	51	51	53
	➢ स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला	70	49	49
	➢ आर्थिक स्थिति के कारण	47	30	51
4.	क्या आपकी पत्नि पढ़ी–लिखी है?	45	55	45
5.	यदि हां तो कहां तक?			
	➢ 5वी	42	51	58
	➢ 8वी	49	42	51
6.	क्या आपके पिता जी पढ़े–लिखे थे?	88	12	88
7.	यदि हां तो कहां तकः			
	➢ 5वी	45	23	55
	➢ 8वी	77	45	23
8.	क्या आपके घर के आस–पास के अधिकांश लोग पढ़े लिखे नहीं है?	47	53	47
9.	क्या आपके परिवार में सभी लोग साक्षर है?	40	60	40
10.	क्या आप और आपके परिवार के सभी लोग पढ़ाई में रूचि रखते है?	49	51	49
11.	क्या आप और आपके परिवार के सभी लोग सरकार के द्वारा चलाए गए साक्षरता अभियान में भाग लिए है ?	79	21	79

व्याख्या

उत्तरदाताओ की शैक्षणिक स्थिति संबंधी उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि 52 प्रतिशत उत्तरदाता ही शिक्षित है, वे भी 5वीं तक ही शिक्षा प्राप्त किए हुए है, 46 प्रतिशत ने 8वीं तक और 02 प्रतिशत उत्तरदाता ने हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त किया है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने निरक्षर होने के कारण घर की आर्थिक स्थिति को माना है, 49 प्रतिशत ने पिता के द्वारा नही पढाया जाना, 47 प्रतिशत के अनुसार खुद नही पढ पाना प्रमुख कारण है। अधिकांश उत्तरदाताओ की पत्नीयां निरक्षर है, 42 प्रतिशत माताए ऐसी है जिन्होने प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त किया है।

इस विषय में शोधार्थी का मानना है कि कुछ लोगो की पत्नियां 3–4 थीं तक पढी थी तो भी वे इसे प्राईमरी मानकर चलते है। केवल 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता जी पढे लिखे थे वे भी 1–2 कक्षा तक। जहां आसपास के लोग भी निरक्षर है वहीं 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं की रूचि शिक्षा के प्रति नही है। उसी प्रकार परिवार के अधिकांश लोग सरकार के द्वारा चलाए गए साक्षरता अभियान में भाग लिए है। इस प्रकार कह सकते हैं कि पलायन श्रमिक करने वाले परिवारों में शिक्षा के प्रति जागरूकता है। अतः परिकल्पना की आंशिक पुष्टि होती है।

H_2 पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

सारणी क्रमांक 3: पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव से संबंधित प्रश्न

क्र.	कथन	हाँ की संख्या	नहीं की संख्या	हॉ की कुल संख्या प्रतिशत में
1.	क्या आपके बच्चे पढ़ाई कर रहें है ?	90	10	90
2.	यदि हां तो किस किस कक्षा में पढ़ाई कर रहें है			
	➢ प्राथमिक	20	25	25
	➢ माध्यमिक	20	10	80
	➢ उच्च माध्यमिक	75	75	80
	➢ उच्चतर माध्यमिक	90	20	25
	➢ अन्य	25	20	10
3.	क्या आपके बच्चे निजी स्कूल में पढ़ रहे हैं?	10	80	10
4.	क्या आपके बच्चें शासकीय स्कूल में पढ़ते है?	90	10	90
5.	क्या आप अपने बच्चों को नियमित स्कूल भेजते है?	71	29	71
6.	बच्चों के लिए क्या निम्न सामाग्री स्वयं लेते है:			
	➢ स्कूल ड्रेस	76	05	73
	➢ पुस्तकें	69	05	76
	➢ बैग	24	95	37
	➢ पानी का बॉटल	31	95	24
	➢ टिफिन बॉक्स	76	05	73
	➢ अन्य आवश्यक सामाग्री विवरण सहित	69	05	76
7.	आपके बच्चे स्कूल किसमें जाते है ?			
	➢ पैदल	30	10	20
	➢ रिक्शा द्वारा	40	70	90
	➢ बस द्वारा	80	60	30
	➢ अन्य साधन द्वारा	10	20	40
8.	क्या आप बच्चों का फीस समय पर दे पाते हैं?	40	60	60

9.	क्या आप बच्चों कि प्रगति रिपोर्ट जानने स्कूल जाते है	20	80	20
10.	क्या आपके बच्चें पढ़ाई में रूचि रखतें है?	70	30	70
11.	क्या आप अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करतें है?	75	25	75
12.	क्या आपके घर के आस–पास के बच्चें पढ़ते है?	31	69	31
13.	क्या आपके पलायन करने से आर्थिक स्थिति का प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता हैं?	51	49	51

व्याख्या

पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव संबधी उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के बच्चे पढाई कर रहे है, पर सभी बच्चे नहीं। अधिकांश 20 प्रतिशत उत्तरदाताओ के बच्चे प्राथमिक स्तर पर, 25 प्रतिशत के बच्चे माध्यमिक दोंनों में है 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं के बच्चे हाईस्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक में भी पढ रहे है, जबकि 10 प्रतिशत उत्तरदाताओ के बच्चे आई. टी. आई व कम्प्यूटर की शिक्षा ले रहे है। 10 प्रतिशत उत्तरदाता अपने बच्चों को निजी स्कूल में भी पढ़ा रहे है जिसमें लडके तथा लडकियॉ दोनों ही निजी विद्यालय में अध्ययनरत् है। बच्चों को स्कूल ड्रेस, पुस्तक, बैग, जूता, बेल्ट जैसी जरूरी चीजे उपलब्ध कराने के विषय में यह पाया गया है कि स्कूल ड्रेस, बेल्ट, जूता व पुस्तक को छोड़कर अन्य चीजे ज्यादातर उत्तरदाता उपलब्ध करा पाने में स्वयं को सक्षम पाते है। अधिकांश उत्तरदाता न तो समय पर फीस दे पाते है और न ही बच्चों की प्रगति रिपोर्ट जानने स्कूल जा पाते है। 75 प्रतिशत लोग अपने बच्चों को पढाई के लिए प्रोत्साहित करते है। 70 प्रतिशत उत्तदाताओं को मानना है कि उनके बच्चे भी पढाई में रूचि रखते है, ज्यादातर लगभग आधे से अधिक उत्तरदाताओं के बच्चों न तो नियमित स्कूल जाते है न ही आस–पास का वातावरण पढऋाई के अनुकूल है।

तालिका के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गरीबी रेखा में जीवन यापन करने के बाद भी लगभग 10 प्रतिशत लोग अपने बच्चे को निजी विद्यालय मे पढाते है इसमें भी वे लड़के प्राथमिकता देते है। ज्यादातर लोग बच्चों को आवश्यक ड्रेस, पुस्तक, जूता, बेल्ट, टिफिन की जरूरते पूरा करते है। वे 10 प्रतिशत उत्तरदाता बच्चो को आटो या रिक्शा से स्कूल भेजते है। यह तथ्य परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है, बच्चों की प्रगति रिपोर्ट के विषय में वे उदासीन पाये गये है। 51 प्रतिशत उत्तरदाता के अनुसार आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव है। इस प्रकार कह सकते हैं, कि पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों में आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना की आंशिक पुष्टि होती है।

निष्कर्ष

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैः

प्रथम परिकल्पना के अनुसार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की शैक्षिक स्थिति निम्न हो सकती है, उत्तरदाताओ की शैक्षणिक स्थिति संबंधी उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि 49 प्रतिशत उत्तरदाता ही शिक्षित है 52 प्रतिशत 5वीं तक ही शिक्षा प्राप्त किए हुए है, 46 प्रतिशत ने 8वीं तक शिक्षा प्राप्त किया है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने निरक्षर होने के कारण घर की आर्थिक स्थिति को माना है, 47 प्रतिशत ने पिता के द्वारा नही पढ़ाया जाना, 30 प्रतिशत के अनुसार खुद नही पढ़ पाना प्रमुख कारण है। अधिकांश उत्तरदाताओ की पत्नियां निरक्षर है केवल 42 प्रतिशत माताएं ऐसी है जिन्होने प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त किया है।

इस विषय में शोधार्थी का मानना है कि कुछ लोगो की पत्नियां 3–4थीं तक पढी थी तो भी वे इसे प्राईमरी मानकर चलते है। 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता जी पढ़े–लिखे थे वे भी 1–2 कक्षा तक। जहां आसपास के लोग भी निरक्षर है वहीं 47 प्रतिशत उत्तरदाताओं की रूचि शिक्षा के प्रति नही है। 49 प्रतिशत अभिभावक ने यह भी बतलाया है कि उनके परिवार के लोगो की रूचि शिक्षा के प्रति नही है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पलायन करने वाले श्रमिक

परिवारों की शैक्षिक स्थति संतोषजनक कही जा सकती है। अतः परिकल्पना की आंशिक पुष्टि होती है।

द्वितीय परिकल्पना के अनुसार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ने अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष परिकल्पना की पुष्टि करता है क्योंकि बच्चो की शैक्षणिक स्थिति संबधी उपरोक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के बच्चे पढाई कर रहे है पर सभी बच्चे नही। अधिकांश 20 प्रतिशत उत्तरदाताओ के बच्चे प्राथमिक स्तर पर, 25 प्रतिशत के बच्चे प्राथमिक माध्यमिक दोनो में है 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं के बच्चे हाईस्कूल एवं उच्च माध्यमिक में भी पढ़ रहे है। इस विषय में यह बताया जाना आवश्यक है कि 100 उत्तरदाताओं में से 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं के बच्चे प्राथमिक, माध्यमिक, हाईस्कूल में पढ रहे है। 10 प्रतिशत उत्तरदाता अपने बच्चों को निजी स्कूल में भी पढा रहे है। इसमे भी सभी 10 प्रतिशत उत्तरदाताओ के लडके तथा लडकियाँ दोनो ही निजी विद्यालय में अध्ययनरत् है।

तालिका के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गरीबी रेखा में जीवन यापन करने के बाद भी लगभग 20 प्रतिशत लोग अपने बच्चे को निजी विद्यालय मे पढाते है, इसमें भी वे लडके प्राथमिकता देते है। ज्यादातर लोग बच्चों को आवश्यक ड्रेस, पुस्तक, जूता, बेल्ट, टिफिन की जरूरते पूरा करते है। 10 प्रतिशत उत्तरदाता अपने बच्चो को आटो या रिक्शा से स्कूल भेजते है। यह तथ्य परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। बच्चों की प्रगति रिपोर्ट के विषय में वे उदासीन पाये गये है जिसका कारण उनके सामाजिक परिवेश को दिया जा सकता है। 51 प्रतिशत उत्तरदाता के अनुसार आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों की आर्थिक स्थिति का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना की आंशिक पुष्टि होती है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, एल. एस. (1996) *भारतीय कृषि का अर्थतंत्र,* राजस्थान हिन्दी ग्रंथ आकादमी, जयपुर, पृ. 16–18।
2. बंसल, एस. सी. (2003) *अधिवास एवं जनसंख्या भूगोल,* रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ. 130–145।
3. बघेल, डी.एस. (2007) *भारत में ग्रामीण समाज,* कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृ. 410–416।
4. भटनागर, आर.पी.; एवं भटनागर, मीनाक्षी (2005) *शिक्षा अनुसंधान,* इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, द्वितीय संस्करण, पृ. 223–233।
5. कपिल, एच.के. (1992–93) *अनुसंधान विधियाँ,* एच.पी.भार्गव बुक हाउस, आगरा, सप्तम संस्करण, पृ. 38–40, 71–75।
6. लक्कड़वाला (1963) *वर्क, वेजेज एण्ड वैल बिइंग इन एन एण्डियन मैट्रोपोलियन,* इकानामिक सर्वे ऑफ बाम्बे, पृ. 120।
7. नेगी, प्रीतम (1984) देहरादून नगर में अप्रवास के प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण, *उत्तर भारत भूगोल पत्रिका,* 20 (1), पृ. 137–142।
8. पाण्डेय, रामशकल (1987) *शिक्षा दर्शन,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, तेईसवां संस्करण. पृ. 25–30।
9. राय, पारसनाथ; एवं भटनागर (1973) *अनुसंधान परिचय,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 62–90।
10. सक्सेना, एस.सी. (1996) *श्रम समस्याएँ एवं सामाजिक सुरक्षा,* रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, पृ. 37।
11. सरीन और सरीन (2007) *शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा. सप्तम संस्करण, पृ. 120–123।
12. तिवारी, विजय कुमार (2001) *छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन,* हिमालया पब्लिषिंग हाऊस, मुबंई, पृ. 92.
13. यादव, विनोद (2008) छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम पलायन की समस्या एक आर्थिक विश्लेषण, अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं.रविशंकर शुक्ल, वि.वि., रायपुर, पृ. 13–18।

——==00==——